[श्री जगन्नाथ मिश्र]

अनेक भाषण सुने। मीठे का तो कहना ही क्या, खट्टे के संबंध में कुछ बातें मैं अवश्य कहूंगा।

तह से पहली बात यह कि हमारे दोस्तों ने कहा कि रेलवे बजट में जहां 2386 करोड़ रुपये की बचत थी अब वह घाटे का बजट हो गया है और वह घाटा 99.75 करोड़ रुपये तक आ गया है। इस संबंध में मैं बजट के आलोचकों से पूछना चाहूंगा कि क्या उन की अपनी जानकारी है इस के बारे में? क्या कभी उन्होंने तह में भी जाने की कोशिश की है? अगर वे तह में जाने की कोशिश करेंगे तो उन्हें स्वयं ही उस का जवाब मिल जायेगा कि क्या कारण हैं, क्या परिस्थितियां हैं जिन के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई और इस के लिये कौन जवाबदेह है? अगर कोई जवाबदेह हैं तो मेरा कहना यह है कि काम करने वालों की अपेक्षा उनको उचकाने वाले ज्यादा जवाबदेह हैं।

इसी प्रसंग में मैं कहना चाहूंगा कि बिना टिकट यात्रा जो होती है, रेल के सामानों की जो चोरी होती है, उन को जो क्षति पहुंचाई जाती है, आये दिन जो हड़तालें होती हैं, बन्ध होते हैं और नये नये फार्मूले निकाले हैं, वी स्लो, वर्क टु रूल, डिस एंड डैट, हम इसकी ओर देखने की चिन्ता नहीं करते। आज रेलवे में जो भी गड़बड़ियां हैं उन का एक कारण यह भी है कि कर्मचारियों में योग्यता का अभाव है, अनुशासनहीनता भी कम नहीं है। यह सब कारण ऐसे हैं जिन की वजह से यह स्थिति उत्पन्न हुई है। मैं अपने दोस्तों से खास कर के उधर बैठने वाले दोस्तों से पूछूंगा कि क्या वस्तुतः उन की इस बात की चिन्ता है क्या वह वास्तव में इस स्थिति से परेशान हैं? अगर ऐसा है तो जिन बातों की मैं ने चर्चा की है उन को वह नजरअन्दाज न करें, उन पर गंभीरता से सोचें। यह एक नेशनल इंटरेस्ट की चीज है। इस लिये इस को मद्दे नजर रखते हुए इस के निवारण में अपना योगदान करें। तभी ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिस में रेल का कार्य-संचालन ठीक से होगा।

अब मैं रेलवे मंत्री महोदय द्वारा जो बजट पेश किया गया है उस के संबंध में कुछ कहना चाहूंगा। मैं ने उस का अवलोकन किया है बड़े गौर से और बहुत ठीक से। मैं सबसे पहले इस बात की चर्चा करना चाहूंगा कि मंत्री महोदय श्री मिश्र ने रेल मंत्री के रूप में कुछ ऐसे परिवर्तनों का श्रीगणेश किया है जो निश्चय ही देश की रेल व्यवस्था के स्वरूप में परिवर्तन करने वाली सिद्ध होंगी।

हमारे देश में रेल सेवा का यह 121वां वर्ष है। हमारे देश में सर्व-प्रथम अंग्रेजों के शासन-काल में रेलवे की सेवा प्रारम्भ हुई। लेकिन आज रेल सेवा से हम जो अपेक्षा करते हैं, आज हमारे जीवन में उस का जो महत्व है, उस जमाने में ऐसा महत्व नहीं था। अंग्रेजी सरकार में अपनी सुख-सुविधा के लिये ···

MR. CHAIRMAN: The hon. Member may continue next time. We will now take up Private Members' Business. Bills to be introduced.

Shri Vishwanath Pratap Singh—absent.

Shri Murasoli Maran—absent.

Dr. Laxminarayan Pandeya—absent.

15.31 hrs.

BANKING COMPANIES (ACQUISITION AND TRANSFER OF UNDERTAKINGS) AMENDMENT BILL *

[AMENDMENT OF SECTIONS 3, 4 ETC]

SHRI C. K. CHANDRAPPAN (Tellicherry): I beg to move for leave to introduce a Bill to amend the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1970.

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to amend the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1970.

The motion was adopted.

SHRI C. K. CHANDRAPPAN: I introduce the Bill.

*Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, section 2, dated 7-3-74.